जब मुझसे पूछा जाएगा

पल्लव

अस्मिताओं की टकराहट तब पैदा होती है जब किसी एक अस्मिता को ही अपनी अस्मिता मान लेते हैं। इंसान बहु-अस्मिताएं अपने साथ लिए चलता है जिसमें लिंग, धर्म, जाति, प्रदेश, भाषा आदि अस्मिताएं शामिल होती हैं। सांप्रदायिकता की समस्या भी एक अस्मिता पर अतिरिक्त बल देने से उत्पन्न होती है।
रामपुनियानी की पुस्तक 'सामप्रदायिकता : एक सचित्र परिचय' शिक्षकों और बच्चों के लिए उपयोगी पुस्तक है।

भारतीय होने का अर्थ ही है कि हम कई अस्मिताओं को साथ लेकर चल रहे हैं। ये ही हमारे देश की विश्व स्तर पर विशेषता है।

- कृष्ण कुमार, शिक्षा विमर्श, जुलाई 2005, पृ. 183

अस्मितावादी पूर्वाग्रहों का असर शिक्षा पर कितना भयानक होता है यह मान्य तथ्य है। इन पूर्वाग्रहों का निर्माण मिथकों के बहाने होता है जो समाज में प्रचलित हैं और धीरे-धीरे पुख्ता होते चले जाते हैं। कक्षा अध्यापन में शिक्षकों को ऐसे पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर कार्यरत पाया गया है जब वे ही ऐसे मिथक को सच माने बैठे हैं कि मुसलमान हम चार हमारे चालीस का सिद्धान्त मानते हैं। बार-बार दुहराए जाने के कारण ये मिथक इस गहराई से बैठ जाते हैं कि इनका प्रसार आगे तक होता जाता है। राम पुनियानी साम्प्रदायिकता के विरुद्ध कार्यरत ऐसे लोक शिक्षक हैं जो अपनी पुस्तकों-व्याख्यानों और कैसेटों के माध्यम से इन मिथकों की असलियत अत्यंत तार्किक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः विभिन्न अस्मिताओं वाले भारत महादेश में ऐसे कार्य इधर बेहद आवश्यक हो गए हैं।

राम पुनियानी की पुस्तक 'साम्प्रदायिकता : एक सचित्र परिचय' का पाठ शिक्षा के दृष्टिकोण से किया जाए तो न केवल यह एक गंभीर प्रयास के रूप में दिखाई देती है अपितु शिक्षण में अकस्मात् आ जाने वाले कई पूर्वाग्रहों का समाधान इससे हो सकता है। 6 दिसम्बर, 1992 को बाबरी मस्जिद का विध्वंस किए जाने के प्रसंग से यह पुस्तक प्रारंभ होती है जो हालिया तथाकथित रामसेतु विवाद तक प्रवाहमान है। इसके बीच में पुनियानी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन, विभाजन, गांधी हत्या और हिन्दु-मुस्लिम साम्प्रदायिक राजनीति का गहराई से विश्लेषण करते हैं।

पुनियानी ने पुस्तक लेखन हेतु प्रश्नोत्तर शैली अपनाई है जो समस्या को एकांगी दृष्टि से देखने से बचाती है। मसलन पहला सवाल ही है 'बाबरी मस्जिद का गिराया जाना भयानक था लेकिन मेरे दोस्त कहते हैं कि वह मस्जिद नहीं थी। वह तो विवादास्पद ढांचा था।' इस मिथक का वे अत्यंत तार्किक ढंग से (तिथि-प्रमाण सहित) उत्तर देते हैं। इसी तरह वे एक और अप्रिय मिथक से मुठभेड़ करते हैं कि

लेखक परिचय :

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर के हिन्दी विभाग में अध्यापन, बनास पत्रिका के संपादक।

पुस्तक :

'मीरा : एक पुनर्मूल्यांकन के संपादक, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा।

सम्पर्क :

403 बी-3, वैशाली अपार्टमेंट, सेक्टर - 4, हिरणमगरी, उदयपुर - 313002

'दंगे कौन शुरू करता है' इसके उत्तर में वे 1969 के अहमदाबाद, 1970 के भिवंडी, 1971 के तेल्लीचेरी, 1979 के जमशेदपुर और 1982 के कन्याकुमारी के कुख्यात दंगों के बाद बैठे जांच आयोगों के निर्णयों को उद्धृत कर वस्तुस्थिति से अवगत करवाते हैं।

हालिया गोधरा काण्ड और उसके बाद हुए गुजरात नरसंहार पर भी इसी तार्किक विवेचन को पढ़ना पाठकों को जिम्मेदार बनाता है। पुनियानी साम्प्रदायिकता के कारणों और नकारात्मक राजनीति की चर्चा ही नहीं करते अपितु वे भारतीय समाज की समन्वयवादी संस्कृति के ऐसे दुर्लभ उदाहरण लाते हैं जिनसे कोई भी जान सके कि भारतीयता वस्तुतः बहुलता से ही निर्मित होती है। भक्ति आंदोलन, हिन्दी-उर्दू आदि सवालों से गुजरते हुए वे सवाल करते हैं - 'भारतीय संस्कृति हिन्दू संस्कृति है। इस्लाम और ईसाइयत जैसे धर्मों ने हमारी संस्कृति पर ''हमला'' किया है। और अब जवाब देखें - 'इसके विपरीत हमारी संस्कृति बहुलता लिए हुए है। यह देश की विविधता को अपने में समेटे हुए है। इसने यहां पर आकर बसे लोगों से बहुत कुछ लिया है। हिंदुओं के भी बहुत से संप्रदाय हैं और उनकी संस्कृति एक रूप नहीं है। केवल अभिजनों की संस्कृति को हिंदू संस्कृति कहा जाता है इसमें से दलितों की संस्कृति को बाहर निकाल दिया जाता है।' इसी तरह एक और मिथक 'हमारा हिंदू राष्ट्र पांच हजार साल पुराना है।' का उत्तर देखिए - 'यह भ्रांत धारणा है क्योंकि राष्ट्र आधुनिक युग की देन है, पहले राजशाही हुआ करती थी। लगभग चार शताब्दी पहले यूरोप में पहली बार राजशाही का स्थान राष्ट्रों ने लिया।' आगे वे इस कथन के संदर्भ में विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करते हैं जो अपने आप में गंभीर शिक्षाप्रद है। धर्म और आतंकवाद के संवेदनशील मसले पर पुनियानी लिखते हैं - 'किसी भी प्रकार के युद्ध से पैदा हिंसा का ताल्लुक धर्मों से नहीं जोड़ा जा सकता। राजाओं का मूल उद्देश्य अपने साम्राज्यों को फैलाना था। उन्होंने ये युद्ध किए तथा इसमें ज्यादा से ज्यादा लोगों को शामिल करने के लिए अपने धर्मों का दुरुपयोग किया। तिमोठी मैक विग ओकलातोमा बॉम्बर ने ईसाइयत की सेवा नहीं की, राजीव गांधी और इनके आसपास के लोगों की हत्या के लिए जीवित बम बनी धानु ने हिंदु धर्म की सेवा नहीं की, इंदिरा गांधी की हत्या और इसके बाद सिखों के कत्लेआम का कारण बनी भिंडरावाले की हिंसा ने सिख धर्म की सेवा नहीं की, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर त्रासदी के समय अल्लाह का धन्यवाद करके ओसामा बिन लादेन ने इस्लाम की सेवा नहीं की और न ही कश्मीरी मिलिटेंट कश्मीर घाटी के बेकसूर हिंदुओं और मुसलमानों को मारकार इस्लाम की सेवा कर रहे हैं। आतंकवाद सामाजिक और राष्ट्रीय असंतोष से पैदा होता है। अन्याय के शिकार लोगों को जब अपनी बात कहने के लिए लोकतांत्रिक रास्ते नहीं मिलते तो असंतोष बंदूकों की बैरलों से निकलता है या बमों के रूप में फूटता है। पूरी दुनिया में अपने धर्म के नाम पर सभी धर्मों के लोगों ने आतंक का सहारा लिया है। केवल एक धर्म ने ही इसका दुरूपयोग नहीं किया है।'

पुस्तक : साम्प्रदायिकता : एक सचित्र परिचय
लेखक : राम पुनियानी (अनुवाद - रामकिशन गुप्ता)
प्रकाशक : उद्‌भावना, ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, जी.टी.रोड, शाहदरा, दिल्ली-95
मूल्य : 60 रु.

पुनियानी इतिहास की कड़वी मिसालों के बरअक्स सौहार्द्र के सुंदर उदाहरण भी खोजते हैं जिनसे समन्वय और बहुलता के विचार को पुष्टि मिल सके। वे पुस्तक में कई स्थानों पर छोटे-छोटे बॉक्स बनाकर ऐसे तथ्यों को हाइलाइट करते हैं। जैसे वे बताते हैं कि शिवाजी के मुख्य सेनापति, विदेश सचिव और विश्वासपात्र सेवक क्रमशः दौलत खान, मुल्ला हैदर और मदानी मेहतर थे। राष्ट्र नायकों की अपने-अपने पक्ष में गढ़ी जाती कट्टरतावादी छवियों को मानवीय चेहरा देने का यह प्रयास अपने में सेकुलर शिक्षा ही कहलाएगा। इसी तरह वे औरंगजेब के वे उदाहरण देते हैं जो उसे कोरा मूर्ति भंजक शासक की छवि में कैद नहीं रहने देते।

पुस्तक में हिंदुत्व की पैरोकारी करने वाले संगठनों के सिद्धान्तों -व्यवहारों की भी चर्चा की गई है। स्त्री और दलितों के संबंध में इन संगठनों के इतिहास की कारकर्दगी पाठकों को सावधान करती है और यहां पुनियानी ने कोई भी ब्यौरा बगैर प्रमाण के नहीं दिया है।

मुस्लिम जनसंख्या के मिथक और गांधी हत्या के बहाने नफरत की राजनीति करने वाली ताकतों पर ऐसा तथ्यात्मक और सहज विवरण अन्यत्र नहीं मिलता। कहा जा सकता है कि इस तरह के प्रयोग वाली पुस्तक शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक उपादेय होगी क्योंकि यह कट्टरता के विरुद्ध समता, बहुलता और सद्‌भावना का विचार स्थापित करती है। ◆